भाषा कौशल

कक्षा - 7

भाषा कौशल–7

1. भाषा और व्याकरण

I. 1. (स), 2. (व), 3. (अ), 4. (र), 5. (ल), 6. (ब), 7. (द), 8. (य)।

II. 1. ×, 2. ✓, 3. ✓, 4. ×, 5. ×, 6. ×, 7. ✓, 8. ×, 9. ×, 10. ×

III. 1. मौखिक, 2. मौखिक, 3. लिखित, 4. लिखित, 5. सांकेतिक।

IV.

	भाषा	लिपि
1.	जर्मन	रोमन
2.	बिहारी	देवनागरी
3.	अंग्रेज़ी	रोमन
4.	पंजाबी	गुरुमुखी
5.	फ्रेंच	रोमन
6.	गुजराती	देवनागरी

V. 1. (ग), 2. (क), 3. (ख), 4. (क), 5. (ग), 6. (क), 7. (क), 8. (क)।

2. वर्ण-विचार

I. 1. आगत, 2. अंतस्थ, 3. ऊष्म, 4. स्पर्श, 5. स्वर।

II. 1. क् + ष, 2. त् + र, 3. ज् + ञ, 4. श् + र।

III. 1. क्षत्रिय, पुत्र, ज्ञान, श्रवण, पक्षी।
2. पत्ता, कुत्ता, सज्जन, मज्जा, छज्जा।
3. डॉक्टर, ज़रा, फ़सल, जज़बात, इज़ाज़त।
4. पतंग, कंबल, संधि, बंदी, तरंग।
5. चाँद, आँख, माँ, मुँह, कुआँ।

IV. 1. कार्यक्रम, 2. विद्यालय, 3. उज्ज्वल, 4. सामाजिक, 5. आशीर्वाद

V. मंदिर, चंदन, कृपा, हृदय, आँख, पंख, दिल, पति, बहू, बंधु, धनुष, कानपुर, दौड़, चोर, बैल, संयुक्त।

VI. 1. (घ), 2. (क), 3. (घ), 4. (क), 5. (ख)।

3. संधि

I. 1. परि + छेद – व्यंजन-संधि
2. यशः + गान – विसर्ग-संधि
3. रजनी + ईश – दीर्घ-संधि
4. अनु + एषण – यण्-संधि
5. निः + मल – विसर्ग-संधि
6. निः + रस – विसर्ग-संधि
7. सदा + एव – वृद्धि-संधि
8. भौ + उक – अयादि-संधि
9. मनः + रथ – विसर्ग-संधि
10. दिक् + दर्शन – व्यंजन-संधि

II. 1. (घ), 2. (क), 3. (क), 4. (ख), 5. (ख)।

III. 1. (ख), 2. (क), 3. (क), 4. (क), 5. (घ)।

IV. 1. दीर्घ-संधि, 2. विसर्ग-संधि, 3. पाँचवें, 4. अयादि-संधि, 5. य, ऋ, र।

V. 1. दीर्घ-संधि – भानूदय, लघूर्मि, मुनीश।
2. गुण-संधि – देवर्षि, रमेश।
3. वृद्धि-संधि – सदैव, मतैक्य।
4. यण्-संधि – स्वागत, पित्राज्ञा, अन्वित, इत्यादि।
5. अयादि-संधि – भावुक, गायक।

VI. 1. **स्वर-संधि–** शिवालय, भवन, नदयागमन, सूर्योदय, वनौषधि, लोकैषणा।
2. **व्यंजन-संधि–** संयोग, उच्छ्वास, सच्छास्त्र, परिच्छेद, दिग्दर्शन, तद्नुसार, उच्चारण।
3. **विसर्ग-संधि–** अधोगति, मनोहर, निश्छल, मनोरथ, निर्मल।

4. शब्द-विचार

I. 1. (ख), 2. (ख), 3. (ख), 4. (ख), 5. (क)।

II. 1. धैर्य, 2. दंत, 3. श्रावण, 4. सत्य, 5. अंध, 6. नव्य, 7. पक्षी, 8. घट।

III. 1. अँधेरा, 2. खेत, 3. ऊँट, 4. ऊँचा, 5. घर, 6. आगे, 7. पूत, 8. आकाश।

IV. **तत्सम्–** पत्र, श्रावण, तृण, दिवस, स्वप्न, मृत्यु, आश्चर्य।
तद्भव– पाँच, सच, दिन, रात, मूर्ख, कीमत, मूढ़।
देशज– लोटा, बाबा, खिड़की, चुन्नी, चारपाई।
विदेशी– ट्रेन, रेफ्रिजरेटर, पेंसिल, स्कूल, टेलीफ़ोन, जहाज, डॉक्टर, वकील, औरत, ट्रक, पेन, कार, अमीर, सरकस।

V. 1. कलम, 2. दूरभाष, 3. स्वतंत्रता, 4. अभ्यास-पुस्तिका, 5. उपचार, 6. पुस्तक, 7. खोज, 8. प्रतिदिन, 9. व्यवस्था।

VI. **रूढ़–** घर, चीता।
यौगिक– विद्यालय, हिमालय, देवालय, विद्या।
योगरूढ़– राजपुरुष, नीलकंठ, देवदूत, नीरज, पंकज।

5. शब्द भेद : अर्थ के आधार पर

I. 1. (घ) (×), 2. (घ) (×), 3. (ख) (×), 4. (ख) (×), 5. (ख) (×), 6. (क) (×)

II. 1. लक्ष्मी, 2. दूध, 3. गंगा, 4. पत्नी, 5. सूरज।

III. 1. दुर्जन, 2. अनुपस्थित, 3. कायरता, 4. अन्याय, 5. डरपोक, 6. पाताल।

IV. 1. नियत, 2. चर्म, 3. दिन, 4. निधन, 5. परिणाम, 6. लक्ष्य।

V. 1. अग्रज, 2. अल्पाहारी, 3. उपर्युक्त, 4. नश्वर, 5. निम्न।

VI. 1. प्रवाह, 2. बहू, 3. नीड़, 4. बलि, 5. वन।

VII. सूची–तालिका; सूचि–सुई; सुधि–सुध; सुधी–बुद्धिमान; भवन–घर, महल; भावन–मोहक; नीर–पानी; नीड़–घोंसला; फन–गुण; फण–साँप का सिर; सीता–राम की पत्नी; सिता–उजला; पुर–भरा हुआ; पूर–कार्य पूरा करने की प्रक्रिया; जुआ–बैलगाड़ी काजुआ; जूआ–जूआखाना; साला–पत्नी का भाई; शाला–विशेष मकान; सेब–फल; सेव–सेंवई; बहु–बहुत; बहू–वधू; ओर–तरफ़; और–तथा, अन्य; बिहार–राज्य; विहार–घूमना; शुक–तोता; शूक–नुकीला; बहन–बहिन; वहन–ग्रहण; अंश–भाग; अंशन–विभाजन।

VIII. 1. शाम, 2. बेटी, 3. निर्धन, 4. बुरा।

IX. 1. (ख), 2. (क), 3. (ग), 4. (ख), 5. (ग)।

6. उपसर्ग

I.
1. नि– निर्भय	2. सद्– सद्गति
3. अ– अपलक	4. आ– आकार
5. सु– सुपुत्र	6. अ– अशिक्षा
7. अप– अपमान	8. सु– सुडौल
9. खूब– खूबसूरत	10. ता– ताउम्र

II.
1. पराजय, पराधीन	2. बिनब्याही, बिनखाए
3. लापता, लाचार	4. अनुमति, अनुभव
5. उत्तर, उत्कंठा	6. बदइंतज़ामी, बदहवास
7. दुराचार, दुबला	8. सम्मति, सम्मान

III. 1. (ख), 2. (घ), 3. (घ), 4. (ग), 5. (घ), 6. (ग)।

IV. **हिंदी के उपसर्ग**– पर, आ।
संस्कृत के उपसर्ग– निर्, अभि, टु, पुनर्, प्रति, दुस्, अधि, सत्, पुन कु, बहिर, नि, सत्, बहिस्, सम्, आ।
उर्दू-फ़ारसी के उपसर्ग– अल, खुश, बद, हर, बे, हम, हर।

7. प्रत्यय

I. 1. प्रत्यय, 2. कृदंत, 3. कर्तृवाचक कृत् प्रत्यय, 4. कर्मवाचक कृत् प्रत्यय, 5. तद्धितांत, 6. क्रियार्थक कृत् प्रत्यय।

II. 1. लघु, ता; 2. लग, आन; 3. सह, आयक; 4. थक, आवट; 5. बन, आवट; 6. वेद, ना; 7. गम, न; 8. मर, इयल; 9. गोल, ई; 10. रोज़, आना।

III. 1. (ख), 2. (क), 3. (ख), 4. (क), 5. (क), 6. (ग), 7. (ख), 8. (क)।

8. समास

I. 1. त्रिलोक, द्विगु समास, 2. नौ ग्रहों का समूह, द्विगु समास, 3. नरसिंह, तत्पुरुष, 4. हार और जीत, द्वंद्व समास, 5. चक्रधर, बहुव्रीहि समास।

II. 1. के, निडर, 2. शक, बिना, 3. धन, हीन, 4. को, स्वर्गप्राप्त, 5. से, जन्मरोगी।

III. 1. गजों का राजा–संबंध तत्पुरुष
2. नौ रात्रियों का समूह–द्विगु समास
3. पीत है जो अंबर–कर्मधारय समास
4. शक्ति के अनुसार–अव्ययीभाव समास
5. सिर में दर्द–अधिकरण तत्पुरुष समास
6. पंचवटी–पाँच वटों का समूह–द्विगु समास
7. नीला है जो कंठ–कर्मधारय समास
8. तीन नेत्र हैं जिसके अर्थात् शिव–बहुव्रीहि समास
9. स्नान के लिए घर–संप्रदान तत्पुरुष समास
10. घन के समान श्याम अर्थात् कृष्ण–कर्मधारय समास

IV. 1. द्विगु समास, 2. समस्तपद, 3. प्रधान, 4. समान, 5. संख्यावाची विशेषण।

V. 1. (क), 2. (क), 3. (ग), 4. (ग), 5. (क), 6. (क)।

9. संज्ञा

I. 1. किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, जाति अथवा भाव आदि का बोध कराने वाले शब्दों को संज्ञा कहते हैं। संज्ञा के पाँच प्रकार हैं–
(क) **व्यक्तिवाचक संज्ञा**– गीता, श्रीराम, श्रीकृष्ण।
(ख) **जातिवाचक संज्ञा**– स्त्री, चित्रकार, फल।

(ग) **भाववाचक संज्ञा**– ममता, बुढ़ापा, खट्टापन।
(घ) **समूह या समुदायवाचक संज्ञा**– झुंड, गुच्छा, सभा।
(ङ) **द्रव्यवाचक संज्ञा**– पीतल, दूध, पेट्रोल।

2. जब हम भाववाचक संज्ञा को बहुवचन के रूप में प्रयोग करते हैं, तब यह जातिवाचक संज्ञा बन जाती है। जैसे–अच्छाइयाँ हमें सफलता के शिखर पर पहुँचाती हैं।

II. 1. व्यक्तिवाचक, 2. व्यक्तिवाचक, 3. व्यक्तिवाचक, 4. भाववाचक, 5. जातिवाचक, 6. जातिवाचक, 7. जातिवाचक, 8. जातिवाचक।

III. 1. (क), 2. (ख), 3. (ग), 4. (क)।

IV. 1. (क), 2. (ग), 3. (ख), 4. (क), 5. (क)।

V. 1. (क), 2. (ख), 3. (ग), 4. (क), 5. (ख)।

VI. 1. पक्षी, 2. हिमालय, 3. सेना, 4. अच्छाई, 5. कोयला

VII. **जातिवाचक संज्ञा**– बच्चा, पक्षी, कीट, छात्र, विद्यालय, भवन, गांव, राज्य, बाज़ार, गली, मिठाई, पुस्तक, बरतन, कॉपी, गेंद, बल्ला, लड़का, पशु, स्त्री।

व्यक्तिवाचक संज्ञा– इंग्लैंड, एशिया, कोलकाता, आगरा, यमुना, धर्मयुग, राम, श्याम, मोहन, सोहन, पटना, गंगा, हिमालय, महाभारत, रामचरितमानस, नवभारत टाइम्स।

भाववाचक संज्ञा– ईमानदारी, सुंदरता, महानता, दया, नम्रता, क्रोध, ममता।

10. लिंग

I. 1. रस्सी से बँधी बकरी बड़ी देर तक मिमियाती रही।
2. रमेश की चाची जी उसके लिए नए कपड़े लाई हैं।
3. लेखिका अपनी नई पुस्तक के बारे में बता रही हैं।
4. किसान का बैल खेत में घुस गया।
5. चोरी होने पर पंडिताइन हो-हल्ला मचाने लगी।

II. 1. लिंग, 2. पुल्लिंग, 3. दो, 4. स्त्रीलिंग, 5. पुल्लिंग।

III. 1. (घ), 2. (ख), 3. (घ), 4. (ख), 5. (ग)।

11. वचन

I. 1. शब्द के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि उसका प्रयोग एक के लिए हुआ है या अनेक के लिए, उसे 'वचन' कहते हैं। वचन दो प्रकार के होते हैं–1. एकवचन, 2. बहुवचन।

2. जिस शब्द से एक वस्तु, व्यक्ति या पदार्थ आदि का बोध हो, उसे 'एकवचन' कहते हैं। जैसे–दरवाज़ा, पौधा, बच्चा आदि।

जिस शब्द से एक से अधिक वस्तु, व्यक्ति आदि का बोध हो, उसे 'बहुवचन' कहते हैं। जैसे–दरवाज़े, पौधे, बच्चे आदि।

II. 1. (क), 2. (क), 3. (क), 4. (घ)।

III. 1. (ख), 2. (ग), 3. (ख), 4. (ख), 5. (ग)।

IV. अंगुलियाँ, पत्तों, भतीजों, तारों, घड़े, भाले, डंडे, बकरियाँ, बाजे।

V. 1. (क), 2. (घ), 3. (ख), 4. (क), 5. (ग)।

12. कारक

I. 1. से, अपादान, 2. से, करण, 3. से, अपादान, 4. से, अपादान, 5. से, करण, 6. से, अपादान, 7. से, करण, 8. से, अपादान, 9. से, करण, 10. से, अपादान।

II. 1. ने, 2. को, 3. से (द्वारा), 4. को, के लिए, 5. से (पृथकता), 6. का, के, की, 7. में, पर, 8. हे, अरे! अहो!

III. 1. (ख), 2. (क), 3. (ग), 4. (घ), 5. (क)।

13. सर्वनाम

I. 1. संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द को 'सर्वनाम' कहा जाता है। सर्वनाम के छह भेद हैं– (क) पुरुषवाचक सर्वनाम, (ख) निश्चयवाचक सर्वनाम, (ग) अनिश्चयवाचक सर्वनाम, (घ) संबंधवाचक सर्वनाम, (ङ) प्रश्नवाचक सर्वनाम, (च) निजवाचक सर्वनाम।

2. जहाँ केवल 'आप' शब्द का प्रयोग श्रोता के लिए हो वहाँ यह आदर-सूचक मध्यम पुरुष होता है और जहाँ 'आप' शब्द का प्रयोग अपने लिए हो वहाँ 'निजवाचक' होता है।

'आप' शब्द का प्रयोग आदर प्रकट करने के लिए एक व्यक्ति के लिए भी होता है और स्वयं के अर्थ में भी प्रयुक्त हो जाता है। जैसे–आप चाय पीजिए। आप लोग कब आएँगे। मैं यह कार्य आप ही कर लूँगा।

3. **निश्चयवाचक सर्वनाम–** जो सर्वनाम किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना आदि की ओर निश्चयपूर्वक संकेत करे वे 'निश्चयवाचक सर्वनाम' कहलाते हैं। जैसे–मोहन 12वीं की परीक्षा में पास हो गया।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम– जिन सर्वनाम शब्दों

से किसी निश्चित व्यक्ति अथवा वस्तु का बोध न हो, उन्हें 'अनिश्चयवाचक सर्वनाम' कहते हैं। जैसे–पता नहीं मोहन 12वीं की परीक्षा में पास होगा या नहीं।

II. 1. (घ), 2. (ग), 3. (ख), 4. (घ)।

III. 1. ×, 2. ✓, 3. ×, 4. ×, 5. ✓।

IV. **उत्तम पुरुष**– हम, हमारा, हमारे।
मध्यम पुरुष– आपने, अपने, अपना।
अन्य पुरुष– उनके, उनसे, कोई, वह।

V. 1. (घ), 2. (क), 3. (क), 4. (क), 5. (घ)।

14. विशेषण

I. 1. मेरी, मुझे; 2. यह, मेरी; 3. यह, तुमने; 4. उन, वे; 5. ये, मुझे; 6. उसने, तुम; 7. कुछ, तुम।

II. 1. घना, लंबा, छायादार।
2. सीधा, साफ़-सुथरा, सही।
3. मीठा, खट्टा, स्वादिष्ट।
4. सुंदर, मेरा, बड़ा।
5. बड़ा, विषैला, डंकवाला।
6. लंबी, काली, रंग-बिरंगी।

III. 1. कुछ गोरे, लोग; 2. बहुत सारी, मिट्टी; 3. एक, सुंदर, पंख; 4. जिसका, सामान; 5. श्वेत, अश्व, रथ।

IV. 1. (ख), 2. (घ), 3. (घ), 4. (क), 5. (क)।

15. क्रिया

I. 1. किया, 2. खेल, 3. दिया, 4. बनाए, 5. देते, 6. लाए।

II. 1. सुनाई, 2. मार डाला, 3. उतरते, देखा, 4. सेवा, 5. खुशी, 6. धो, 7. चिंता किए बिना, काम करता रहा, 8. लिखा, 9. सुला दिया, 10. पिलाया।

III. 1. हँसकर, 2. पीकर, 3. पालथी मारकर, 4. बैठी चिड़िया, 5. छूट, 6. खाकर, 7. व्यवहार देखकर, 8. घूमने, 9. सुनकर, 10. उठकर।

IV. 1. क्रिया, 2. सकर्मक क्रिया, 3. एकर्मक क्रिया, 4. संयुक्त क्रिया, 5. पूर्वकालिक क्रियाएँ।

16. काल

I. 1. (क), 2. (ख), 3. (ग), 4. (क), 5. (ग)।

II. 1. राम मोहन को पानी पिलाएगा।
2. माँ अपने बच्चे को दूध पिलाएगी।
3. अजेश स्नेहलता से बात करेगा।
4. अर्चना अजेश को डाँटेगी।
5. मैं स्नान करूँगा।

III. 1. मामा मामी को डाँटेंगे।
2. मैं विद्यालय जाऊँगा।
3. संगीता खेलेगी।
4. हम स्नान करेंगे।
5. रमेश बाज़ार जाएगा।

IV. 1. ×, 2. ×, 3. ✓, 4. ×, 5. ✓, 6. ✓, 7. ×, 8. ×

17. वाच्य

I. 1. क्रिया के जिस रूपांतर से यह ज्ञात हो कि वाक्य में प्रयुक्त क्रिया का प्रधान विषय कर्ता, कर्म अथवा भाव है, उसे 'वाच्य' कहते हैं। वाच्य के तीन भेद हैं–
(क) कर्तृवाच्य, (ख) कर्मवाच्य, (ग) भाववाच्य।
(क) कर्तृवाच्य– (*i*) माँ खाना बनाती है। (*ii*) सोहन खेलता है।
(ख) कर्मवाच्य– (*i*) लेखक द्वारा पुस्तक लिखी गई। (*ii*) पौधों में पानी डाला गया।
(ग) भाववाच्य– (*i*) रमेश को दया नहीं आती। (*ii*) आपसे हँसा नहीं जाता।

2. कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाना
(क) कर्तृवाच्य की क्रिया को सामान्य भूतकाल में बदलना चाहिए।
(ख) उस परिवर्तित क्रिया-रूप के साथ काल, पुरुष, वचन और लिंग के अनुरूप 'जाना' क्रिया का रूप जोड़ना चाहिए।
(ग) कर्ता के पश्चात 'से', 'द्वारा' अथवा 'के द्वारा' का प्रयोग करना चाहिए।
जैसे–कर्तृवाच्य–श्यामा उपन्यास लिखती है।
कर्मवाच्य–श्यामा से उपन्यास लिखा जाता है।

II. 1. कर्तृवाच्य, 2. भाववाच्य, 3. भाववाच्य, 4. कर्मवाच्य, 5. कर्तृवाच्य, 6. कर्मवाच्य, 7. कर्मवाच्य, 8. कर्मवाच्य।

III. 1. उससे तख्त पर सोया नहीं गया।
2. वह यह दृश्य देख रहे हैं।
3. मित्र द्वारा विपत्ति में मदद की गई।
4. तुम यह वज़न उठा रहे हो।
5. हमसे आज रात को ठहरा नहीं जाएगा।

6. सुरेश ने नाटक खेला।
7. उनसे यह दुर्दशा नहीं देखी गई।
8. कमला कल पत्र लिखेगी।
9. आपने गाना गाया।
10. मज़दूर पत्थर तोड़ रहे हैं।

18. अव्यय (अविकारी) शब्द

I. 1. वहीं–स्थानवाचक, 2. वहाँ–स्थानवाचक, 3. खेत में–स्थानवाचक, घर में–स्थानवाचक, 4. मेरी ओर–स्थानवाचक, 5. निस्पंद–रीतिवाचक, 6. चुपचाप–रीतिवाचक, 7. कहाँ–स्थानवाचक, 8. कितना–परिमाणवाचक।

II. 1. के बिना, 2. और, 3. के अतिरिक्त, 4. के लिए।

III. 1. क्या!, 2. ठीक!, 3. हाय!, 4. धत्!, 5. अहा!, 6. ओ!

19. पद-परिचय

I. 1. **छोटी–** विशेषण
भेद– गुणवाचक, लिंग– स्त्रीलिंग, वचन– एकवचन, अवस्था– मूलावस्था, विशेष्य– बहन!

2. **यहाँ–** क्रिया-विशेषण
भेद– स्थानवाचक, संबंध–'रहता है' क्रिया से।

3. **गणतंत्र–** संज्ञा का पद-परिचय
भेद–व्यक्तिवाचक, लिंग–पुल्लिंग, वचन–एकवचन, कारक–अधिकरण, संबंध–'जाता है' क्रिया के साथ संबंध।

4. **तेज़-तेज़–** क्रिया-विशेषण
भेद–रीतिवाचक, संबंध–'चलता है' क्रिया से।

5. **वह–** सर्वनाम
भेद–पुरुषवाचक, लिंग–पुल्लिंग, वचन–एकवचन, पुरुष–अन्य पुरुष, कारक–कर्ता कारक, संबंध–'नहीं है' क्रिया के साथ संबंध।

6. **सुंदर–** विशेषण
भेद–गुणवाचक, लिंग–पुल्लिंग, वचन–बहुवचन, अवस्था–मूलावस्था, विशेष्य–फूल।

7. **सातवीं–** विशेषण
भेद–क्रमवाचक, निश्चित संख्यावाचक, लिंग–स्त्रीलिंग, वचन–एकवचन, अवस्था–मूलावस्था, विशेष्य–कक्षा।

8. **दूध–** संज्ञा
भेद–जातिवाचक, लिंग–पुल्लिंग, वचन–एकवचन, कारक–कर्ता, संबंध–'पी रहा है' क्रिया के साथ संबंध।

9. **बहुत–** विशेषण
भेद–परिमाणवाचक, लिंग–पुल्लिंग, वचन–एकवचन, अवस्था–मूलावस्था, विशेष्य–छात्र।

10. **यह–** सर्वनाम
भेद–पुरुषवाचक, लिंग–पुल्लिंग, वचन–एकवचन, पुरुष–अन्य पुरुष, कारक–कारक संबंध, संबंध –'की है' कर्ता के साथ संबंध।

II. 1. (क), 2. (ग), 3. (क), 4. (ख), 5. (क), 6. (ख), 7. (ग), 8. (क), 9. (ग), 10. (ग)।

III. 1. (ख), 2. (क), 3. (ग), 4. (क), 5. (घ)।

20. वाक्य

I. 1. एक दिन तूफ़ान आते ही सब कुछ नष्ट हो गया।
2. मेरे पास एक बरतन है जिसमें चीनी है।
3. वे सदा सत्य बोलते हैं और कभी नहीं डरते।
4. वह इतना बीमार है कि कहीं आ-जा नहीं सकता।
5. मैं आया और अमर सो गया।
6. मेरे आते ही चोर भाग गए।
7. बारिश आने पर गेहूँ भीग गए।

II. 1. लक्ष्य, पेड़; 2. अजेश, झूठ; 3. मामाजी, दौड़; 4. सचिन, विद्यालय; 5. लोग, गाना।

III. 1. निश्चयवाचक, 2. निषेधवाचक, 3. विधानवाचक, 4. विधानवाचक, 5. निषेधवाचक, 6. प्रश्नवाचक, 7. संदेहवाचक, 8. प्रश्नवाचक, 9. निषेधवाचक, 10. विस्मयवाचक, 11. इच्छावाचक, 12. आज्ञावाचक, 13. संदेहवाचक, 14. संदेहवाचक।

IV. आज्ञावाचक–आओ, प्रश्नवाचक–क्या, निषेधवाचक–नहीं, संदेहवाचक–शायद, विस्मयवाचक–अहा।

V. 1. संयुक्त, 2. सरल, 3. मिश्र, 4. मिश्र, 5. मिश्र, 6. संयुक्त, 7. मिश्र, 8. सरल, 9. मिश्र, 10. सरल।

VI. 1. (घ), 2. (ग), 3. (क), 4. (ग), 5. (क), 6. (क), 7. (क), 8. (क)।

21. अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करना

I. 1. पिता जी बाज़ार गए हैं।
2. इस पुस्तक में बहुत कहानियाँ हैं।
3. यहाँ पशु-मेला लगा है।
4. मदर डेयरी में गाय का ताज़ा दूध मिलता है।

5. माता जी यहाँ बैठी हैं।
6. मैंने खाना खा लिया है।
7. बच्चा बिस्तर पर सो गया है।
8. खाने के लिए चार फल लाओ।
9. उसने एक मोतियों की माला खरीदी।
10. मैं बहुत दुनिया देख चुका।

II. 1. (ग), 2. (क), 3. (ख), 4. (घ), 5. (घ)।

III. 1. (ग), 2. (घ), 3. (घ), 4. (घ), 5. (घ)।

22. विराम-चिह्न

I. 1. (–), 2. (:), 3. (॒), 4. (" "), 5. (?), 6. (।), 7. (;), 8. (०), 9. (:–), 10. (=)

II. 1. मेरी उम्र नौ साल की थी, वह चौदह साल के थे।
2. मुझे लगा, "मानो, मैं अनंतकाल में जी रहा हूँ।"
3. इन सबका रंग एक ही है, रूप में भिन्नता, जो भी हो।
4. पूजा के लिए दान-दक्षिणा चाहिए।
5. क्या तुम भयभीत थीं?
6. क्या तुम्हें पृथ्वी नहीं पुकारती?
7. दोनों ही स्थितियाँ प्रकाश के वर्ण, रंग में बदलाव लाती हैं।
8. यह भयंकर अवस्था है।
9. शैतान! मैं तुझे छोड़ने वाला नहीं।
10. रमा, तुम क्या कर रही हो?
11. एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा।
12. मैंने 'हिंदी' में 'एम०ए०' किया है।
13. शहर भर के लोगों के पुत्र, शोक से द्रवित हो उठे।
14. माँ रमा से, "तुम कहाँ जा रही हो?"

23. मुहावरे और लोकोक्तियाँ

I. 1. बात का धनी होना (वादे का पक्का)–सोहनलाल अपनी बात का धनी है।
2. बरस पड़ना (गुस्सा होना)–श्याम के परीक्षा में नंबर कम आने पर उसके पिताजी बरस पड़े।
3. लोहे के चने चबाना (मज़ा चखाना)–वीर शिवाजी ने मुगलों को युद्ध-भूमि में लोहे के चने चबवा दिए।
4. दाल में काला होना (कुछ गड़बड़ होना)–चोरी होने के दिन से ही घर का नौकर रामू गायब है। दाल में कुछ काला अवश्य है।
5. नौ-दो ग्यारह होना (भाग जाना)–पुलिस को आता देख चोर नौ-दो ग्यारह हो गए।
6. पीठ ठोंकना (शाबाशी देना)– राधा के कक्षा में प्रथम आने पर उसके पिताजी ने उसकी पीठ ठोंकी।
7. चकमा देना (धोखा देना)– ठग, लोगों को चकमा देकर उनकी संपत्ति लूट लेते हैं।
8. नाक रगड़ना (गिड़गिड़ाना)– चोर ने थानेदार के समक्ष खूब नाक रगड़ी, पर थानेदार ने उसे नहीं छोड़ा।
9. भीगी बिल्ली बनना (भय के कारण चुप रह जाना)– माँ के सामने तो शेर लग रहे थे, पर पिता जी के आते ही भीगी बिल्ली क्यों बन गए?
10. अँगूठा दिखाना (कुछ देने से साफ़ इनकार कर देना)–किसान के ऋण माँगने पर महाजन ने उसे अँगूठा दिखा दिया।

II. 1. (क), 2. (ग), 3. (घ), 4. (क)।

III. 1. इस तरह झक मारने से काम नहीं होगा।
2. चोर पुलिस को चकमा देकर भाग गया।
3. मैंने राघव से मदद माँगी तो उसने मुझे अँगूठा दिखा दिया।
4. जब तक अफ़सरों के तलवे चाटते रहोगे, तरक्की नहीं मिलेगी।
5. उस पर विश्वास न करना, वह तो थाली का बैंगन है।
6. बिल्ली को सामने से आता देख चूहा नौ-दो ग्यारह हो गया।

IV. 1. (क), 2. (ख), 3. (ग), 4. (क), 5. (क), 6. (ग)।

24. एवं 25.

विद्यार्थी स्वयं अभ्यास करें।

26. अपठित गद्यांश

I. 1. (क), 2. (घ), 3. (ग), 4. (घ)
5. आँखों में समाना (दिल में बस जाना)–गिरिधर मीरा की आँखों में समा गए।
मुट्ठी में होना (वश में होना)–अमेरिका अस्त्र-शस्त्रों के बल पर आज दुनिया के सभी राष्ट्रों को अपनी मुट्ठी में कर लेना चाहता है।
6. यह एक त्वरित गति और शीघ्रतम कार्य करने वाला उपकरण है।
7. **सरल–** हिंदी भाषा एक सरल भाषा है।

सुलभ– ए०टी०एम० मशीनों ने पैसा निकालना सुलभ कर दिया है।

8. **कंप्यूटर–** हमारा सच्चा साथी।

II. 1. (क), 2. (क), 3. (ख), 4. (ख)

5. एकता शक्ति को मज़बूत करती है।
6. अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता (एकता में बल)–कारगिल के युद्ध में यदि भारत के सभी सैनिकों ने बल और एकतापूर्वक एक-दूसरे का साथ नहीं दिया होता तो क्या अकेला चना भाड़ फोड़ सकता था?
7. खंड-खंड (टुकड़ा-टुकड़ा)–भारत का खंड-खंड अत्यधिक सुंदर है।
8. नौ-दो ग्यारह होना (भाग जाना)–शेर को आते देख हिरन नौ-दो ग्यारह हो गया।

III. 1. (क), 2. (ख), 3. (क), 4. (क)

5. यहाँ शिवालिक पर्वत श्रेणियाँ घने वन तथा देवस्थल भी हैं।
6. सघन वन–सघन वन हिमालय की सुंदरता में चार चाँद लगा देते हैं।
   पक्षीवृंद–सुबह के समय जब पक्षीवृंद चहचहाते हैं तो सारा वातावरण संगीतमय हो जाता है।
7. देव के लिए स्फल, संप्रदान तत्पुरुष
8. हिमालय–भारत का गर्व

27. अपठित पद्यांश

I. 1. (ख), 2. (क), 3. (ख), 4. (क)

5. न बुरा सुनो, न बुरा देखो, न बुरा बोलो।
6. तीन
7. न बुरा सुनो, न बुरा देखो, न बुरा बोलो।
8. न बुरा सुनो, न बुरा देखो, न बुरा बोलो।

II. 1. (घ), 2. (ग), 3. (ख), 4. (ख)

5. चंचल।
6. इस पंक्ति का तात्पर्य है कि जिस प्रकार कोरे कागज़ पर कुछ भी लिखा जा सकता है उसी प्रकार बच्चों के मन का कागज़ भी कोरा होता है उस भोले मन रूपी कागज़ पर हम अच्छा या बुरा जो भी लिखते हैं वह अंकित हो जाता है। ज़रूरत है तो यह समझने की कि उन बच्चों के मन का पंछी कैसी उड़ान भरना चाहता है।
7. अपने मन की।
8. मन का पंछी।

III. 1. (ख), 2. (घ), 3. (क), 4. (क)

5. धरती पर, धरती के नीचे और धरती के ऊपर।
6. धरती पर रहने वाले पक्षी चहचहाते हुए, पंख फहराते हुए यहाँ-वहाँ मँडराते हैं, दाने दो तो चुगते हैं और गाना लंबा सुनाते हैं।
7. इस धरती पर मानव, पशु-पक्षी आदि सभी बराबर हैं।
8. इस पंक्ति का तात्पर्य है कि पंछी अपने पंख फहराते हुए गगन में मँडराते हैं। पूरी धरती और आसमान में अपनी चहचहाहट से मधुर संगीत भर देते हैं। उन्हें दानों का लालच नहीं होता। वह संतोषी होते हैं दो ही दाने मिलने पर भी खुश हो जाते हैं। यह संदेश पक्षियों द्वारा मानव-जाति को दिया गया है कि जो है, जितना है उसमें संतोष करो और खुश रहकर खुशियाँ फैलाना सीखो।

IV. 1. (क), 2. (घ), 3. (घ), 4. (ख)

5. प्रकृति का सुंदर बखान करते हुए माँ अपने बेटे को उठा रही है।
6. भौंरे गुंजायमान कर रहे हैं।
7. चहचहाने लगती हैं।
8. कमल खिल उठे हैं, भौंरे उन पर झूल रहे हैं। पेड़ों पर बैठी चिड़ियाँ चहक रही हैं, ठंडी हवा चल रही है और आसमान में सुंदर लालिमा छाई है।